# द्वितीय अध्याय

# गोपाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व और कृतित्व

## 2.1 जीवन वृत्त

साहित्यकार समाज का एक विशिष्ट अंग होता है, वह समाज में रहकर सभ्यता संस्कृति धर्म-कर्म, रीति-रिवाज, इतिहास आदि से संस्कार ग्रहण करता है। रचनाकार सामान्य व्यक्तियों से अधिक संवेदनशील एवं कल्पनाशील होता है। सामान्य आदमी की अपेक्षा उसकी अनुभूति अधिक गहन एवं व्यापक होती है। जन सामान्य के जीवन में अनेक घटनाएँ घटित होती हैं उनमें से कुछ उसे प्रभावित भी करती है, क्षणभर के लिए वह आन्दोलित भी होता है किंतु बाद में उसे भुला देता है लेकिन एक रचनाकार उन अनुभूतियों को, अपनी संवेदनाओं को शब्दों का परिधान पहनाकर अपनी कृतियों में संजोता है। अपने भावों विचारों को विभिन्न माध्यमों से साहित्यिक विधाओं द्वारा अभिव्यक्त करता है।

जो साहित्यकार अपनी रचनाओं में समाज के सुख-दुख की बात करता है, वह समाज में सम्मानित होता है। रचनाकार की वह कृति ही, जो समाज सापेक्ष है, जिसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में युगीन चित्रण विद्यमान है, सार्थक मानी जाती है। अपने युग से कटकर साहित्य-सृजन करने वाले साहित्यकार और उसकी रचना को शीघ्र ही विस्मृत कर दिया जाता है।

साहित्यकार जहाँ सामाजिक विकृतियों-विषमताओं का यथार्थ चित्रण करते हुए उनके प्रति आक्रोश व्यक्त करता है, वहीं एक आदर्श एवं सुखी समाज की स्थापना के लिए उसे अपनी रचनाओं द्वारा प्रेरित भी करता है। प्रेरक साहित्य का निर्माण करने वाले रचनाकार का समाज के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है। साहित्य का मूल दायित्व मानवीय मूल्यों तथा सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक चेतना

का विस्तार करना है। मानव और समाज की उपेक्षा करने वाला कोई भी जीवन-दर्शन या साहित्यिक चिंतन समाज द्वारा मान्य नहीं होता। साहित्य का मूल उद्देश्य मानव को मानासिक और भौतिक ग्रंथियों से मुक्त करना है। व्यंग्यकार श्री गोपाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व समन्वित रूप से इस कसौटी पर खरा उतरता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य की लम्बी सृजनधारा के तट पर अनेक विशिष्ट व्यक्तित्व अंकुरित, पल्लवित और विकसित हुए हैं और उन्होंने अपने वैभव और समृद्धि से हिंदी साहित्य को पूर्ण बनाने में योगदान दिया है। ऐसे विशिष्ट व्यक्तित्वों में एक नाम गोपाल चतुर्वेदी जी का भी है। जीवन के व्यापक अनुभवों को स्वयं भोगते और जीते हुए उसे ज्यों का त्यों शब्दचित्रों में उतार देना गोपाल जी की उल्लेखनीय विशेषता है।

''सचमुच युगीन सत्यों को व्यक्त करने वाला व्यंग्य, व्यक्ति की पेचीदिगियों, आपाधापियों, दुर्घटनाओं को रेखांकित करने वाला व्यंग्य मात्र मनोरंजन साहित्य नाम का मैखाना नहीं होगा, वह विपरीत परिस्थितियों के प्रति असंतोष जगाने के साथ-साथ बदलाव की वांछा और आकांक्षा को भी आंदोलित करता है। चाहे भारतेन्दु हो अथवा बालमुकुद गुप्त निराला हो अथवा बालमुकुंद गुप्त निराला हो अथवा नागार्जुन, सर्वेश्वर हों अथवा भारतभूषव अग्रवाल, भवानी प्रसाद मिश्र हों अथवा प्रभाकर माचवे, सभी ने अपने व्यंग्यों  को मात्र मनोरंजन का उपकरण नहीं बनाया है। व्यंग्य की यह सार्थक परिभाषा हर बड़े और सार्थक व्यंग्यकार पर लागू होती है। गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग भी इस नियम के अपवाद नहीं हैं।''[1]

समकालीन व्यंग्यकारों के मध्य गोपाल चतुर्वेदी उन गिने-चुने लोगों में से हैं जिनके लिए रचना कर्म ही एक मात्र प्रधान कर्म है। व्यंग्यकारों के बीच अपनी भाषिक सजगता के कारण गोपाल चतुर्वेदी

अलग ही खड़े दिखाई देते हैं। उनका व्यंग्य साहित्य बहुत समृद्ध है। इन्हें कीर्ति के सोपानों पर चढ़ाने वाले इनके व्यंग्य साहित्य को वर्षोपरांत भी अपने स्थान से कोई हटा नहीं पाएगा।

**2.1 जीवन वृत्त :**

गोपाल चतुर्वेदी का जन्म 15 अगस्त 1942 को लखनऊ में हुआ। इनके पिता का नाम डॉक्टर शालिग्राम चतुवेर्दी तथा माता का नाम श्रीमती नर्वदा चतुर्वेदी था। इनका बचपन मध्य प्रदेश के देवास में बीता और वहीं से इनकी प्रारम्भिक शिक्षा सिन्धिया स्कूल ग्वालियर से आरम्भ हुई।

''हर प्रसिद्ध साहित्यकार की तरह गोपाल चतुर्वेदी का परिचय भी इतना प्रकाशवान है कि उसके लिए सूर्य को दीपक दिखाने जैसी स्थिति पैदा हो जाए। उनका जन्मदिन भारत छोड़ो आन्दोलन और स्वतंत्रता दिवस को याद दिलाने वाला है यानि-15 अगस्त 1942 इसवी। हिंदी साहित्य में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी और श्रीलाल शुक्ल के आंतकी व्यक्तित्व के बावजूद गोपाल चतुर्वेदी ने अपनी लेखकीय अस्मिता बचाए रखी एवं उनकी रचनाएँ उनके अलग लेखकीय व्यक्तित्व का अहसास साहित्य-जगत् को कराती रहीं और सावधान करती रहीं कि धृतराष्ट्री आलोचक उन्हें आदि-आदि की श्रेणी में रखने का साहस न करें। गोपाल चतुर्वेदी में आम आदमी के लेखक का सौम्य लगातार अपने अफसरशाही के मुखौटे को पीछे धकेलता रहता है।''[2]

हिंदी के इस व्यंग्यकार का जन्म एक ऐसे ब्राह्मण परिवार में हुआ जो संस्कार से निष्ठावान था। अति सम्पन्न वातावरण में ऊपरी तौर पर बालक गोपाल को कोई कष्ट नहीं था। घर में भौतिक सुख सुविधाओं की पूर्ण व्यवस्था थी। ब्राह्मण परिवार से होने के कारण इनके घर में पूजा-पाठ का विशेष महत्त्व था। वे स्वयं भी नियमित रूप से संध्या वंदन, गायत्री मंत्र आदि संस्कारों से पूर्ण हैं। माता पिता की अध्ययनशीलता तथा पारिवारिक जीवन का पूरा-पूरा प्रभाव गोपाल जी के साहित्य पर पड़ा है। गोपाल

जी स्वयं द्विज हैं और उनके प्रायः सभी व्यंग्य लेखों मे द्विज वातावरण देखने को मिलता है। सृजन को जीवन का एकमात्र लक्ष्य बनाने के मूल में उनके संस्कार प्रमुख हैं।

गोपाल जी का बाल्यकाल ग्वालियर में ही व्यतीत हुआ यहीं पर इन्होंने अपनी शिक्षा आरम्भ की। ग्वालियर से ही इन्होंने हमीदिया कॉलेजसे स्नातक की परीक्षा पास की। तत्पश्चात् इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1968 में निशा मिश्रा से इनका विवाह हुआ, जो स्वयं भारतीय कस्टम-एक्साइज सेवा में कार्यरत थीं। गोपाल चतुर्वेदी सन् 1956-66 में भारतीय पुलिस सेवा में तत्पश्चात् वर्ष 1966 में रेलवे लेखा परीक्षा सेवा में चयनित हुए। 1966-93 तक रेल, गृह व नागरिक उड्डयन मंत्रालयों में अनके प्रतिष्ठित व उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहें। राजभाषा विभाग में उसके प्रथम सचिव श्री रमा प्रसन्न नायक, आई.सी.एस के साथ उपसचिव के पद पर कार्य किया। 1993-98 में राज्य व्यापार निगम (एस.टी.सी) में निदेशक/वित्त, कार्मिक, अध्यक्ष जैसे उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर नियुक्त हुए। इन पदों पर रहते हुए भी इन्होंने निरंतर हिंदी साहित्य की सेवा की है। अनेक पत्र पत्रिकाओं में इनके लेख, लघुकथाएँ व समाज की दुष्प्रवृत्तियों पर व्यंग्य निरंतर प्रकाशित होते रहे हैं। चूंकि वे स्वयं सरकारी अफसर थे, इसलिए इन्होंने कार्यालय से संबंधित छोटी से छोटी, भ्रष्टाचार से संबंधित बातों को अपने व्यंग्य लेखों से समाज तक पहुँचाने का कार्य किया है।

**2.2 व्यक्तित्व** :

व्यक्ति के व्यक्तित्व में बहिर्मुखी एवं अंतर्मुखी दोनों ही रूप आ जाते है। बाह्य रूप कृत्रिम होता है जिसे बदला भी जा सकता है। फिर भी बाह्य रूप का अपना अलग महत्त्व होता है। व्यक्ति की सभ्यता एवं संस्कृति का पहला प्रभाव उसके बाह्य रूप से ही पड़ता है। किंतु बाह्य रूप को व्यक्तित्व का वास्तविक रूप नहीं कहा जा सकता है। व्यक्ति के वास्तविक रूप का आधार उसका आंतरिक रूप ही होता है यह रूप चिंतन, अनुभूति, संवेदना एवं भावनाओं से संबंधित होता है।

एक साहित्यकार और सामान्य व्यक्ति में बस इतना ही फर्क होता है कि सामान्य व्यक्ति अपने विभिन्न अनुभवों को शब्दों के माध्यम से लोगों तक पहुँचा नहीं पाता है जबकि एक साहित्यकार अपने अनुभवों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर देता है। वास्तव में अभिव्यक्ति की यह कुशलता ही एक साहित्यकार को सामान्य मनुष्य से अलग करती है।

साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व में गहरा संबंध होता है। उसके जीवन और लेखन को एक-दूसरे का पर्याय कहा जा सकता है। साहित्यकार अपने जीवन की विभिन्न घटनाओं को जो अभिव्यक्ति प्रदान करता है वह उसके कृतित्व में साफ झलकती है।

गोपाल चतुर्वेदी का भी व्यक्तित्व और कृतित्व एक दूसरे से गहरे संबंधित एवं संपृक्त है। आत्म जागरूकता उनके व्यक्तित्व एवं साहित्य में दृष्टिगोचर होती है।

गोपाल चतुर्वेदी मूलतः व्यंग्यकार हैं। इन्होंने जीवन को अनुभूति और चिंतन के विभिन्न धरातलों पर ग्रहण किया है। इनकी रचनाओं में भी यत्र-तत्र इनके व्यक्तित्व की झलक बिखरी पड़ी है।

जीवन के 72 वसंत देख चुके गोपाल जी के चेहरे पर वही युवकों-सी मुस्कान, काम करने का उत्साह तथा फुर्ती और सभी के काम आने की तत्परता मौजूद है। इतनी आयु होने के बाद भी वे थककर बैठने के लिए तैयार नहीं है। कन्हैयालाल नंदन के शब्दों में- ‘‘गोपाल जिंदगी को; जिन्दगी के हर लम्हे को मजा लेकर जीने में विश्वास करते हैं। विश्वास न हो तो फोन मिला  लीजिए, जवाब में सबसे पहले गोपाल का ठहाका सुनाई देगा।’’[3] गोपाल चतुर्वेदी लगातार साहित्य सृजन में लीन हैं। वे जहाँ अत्यंत सहज एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं वहीं एक सहृदय एवं संवेदनशील साहित्यकार भी हैं। इतने बड़े साहित्यकार एवं सरकारी अफसर होते हुए भी उनके अंदर अंह की भावना लेशमात्र भी नहीं है। उनका व्यवहार अत्यधिक विनम्रतापूर्ण है। उनसे मिलकर ऐसा लगता ही नहीं है कि वे इतने बड़े साहित्यकार हैं।

जब मैं उनसे मिलने उनके घर 'उत्सव' गई तो उन्होंने बड़े स्नेह पूर्ण भाव से मुझे बैठाया। पहली बार मिलने के बावजूद ऐसा नहीं लग रहा था कि मैं उनसे पहली बार मिल रही हूँ। उनके चेहरे पर एक सादगी और हल्की मुस्कान सदैव दिखाई देती है। वे बातों को ध्यान से सुनते हैं तथा किसी भी समस्या के पूर्ण समाधान का प्रयास करते हैं। सरलता एवं सादगी की स्पष्ट छाप लिए हुए, दिखावे से दूर गाम्भीर्य एवं हास्य दोनों का संतुलित आवरण, संवेदनशीलता और उदार व्यक्तित्व गोपाल जी का विशेष गुण है। उनमें इतना खुलापन है कि परिचित होने में कठिनाई नहीं आती। एक बार मिलने पर बार-बार मिलने को मन करता है, ऐसा ही स्वभाव है उनका। उनमें स्वाभिमान तो है लेकिन अभिमान नहीं गर्व तो हैं परंतु दम्भ नहीं, वे किसी के सामने झुकते नहीं तो किसी को झुकाना भी नहीं चाहते हैं।

वे अपने से छोटों को स्नेह और आत्मीयता ही नहीं, सम्मान भी देते हैं। यह उनका ऐसा बड़प्पन है, जो आज दुर्लभ है। उनके स्वभाव में सरलता है, वे जैसे बाहर से दिखाई देते हैं वैसे ही अंदर से भी हैं। उनमें गज़ब का संतुलन है। जीवन के शुरूआती दौर में इन्हें असफलताएँ भी मिली, लेकिन इन्होंने कठोर परिस्थितियों में भी धैर्य एवं विवेक को नहीं छोड़ा। चतुर्वेदी जी अनेक विपत्तियों में भी उस पेड़ की भांति अडिग खड़े रहे हैं, जो झुक-झुककर पृथ्वी तक लग जाता है, लेकिन टूटता नहीं। यही संघर्ष इनमें पूर्ण रूप से दिखता है।

### 2.1.1 धार्मिक प्रवृत्ति :

गोपाल चतुर्वेदी को घर से ही वैष्णव संस्कार प्राप्त थे। अतः वह छुआछूत को नहीं मानते, जीव हिंसा भी वे नहीं करते। जात-पात को भी उन्होंने अपने जीवन में कोई स्थान नहीं दिया है। व्यंग्यकार होने के नाते औरों की अपेक्षा वे अधिक संवेदनशील है। दीन-दुखियों पर दया करने वाले तथा विद्वानों का आदर करने वाले व्यक्ति हैं। नैतिक मूल्यों को उन्होंने अपने व्यक्तित्व में संजो कर रखा है। दूसरों के दुःख में दुखी रहने की उनकी प्रवृत्ति उनके सच्चे इन्सान होने का प्रमाण है। उनका जन्म एक हिंदू परिवार में हुआ

है फिर भी वे सभी धर्म को समानता से देखते हैं। उनका धर्म मानवधर्म है जो किसी जाति-विशेष या धर्म में बंधा नहीं है।

### 2.2.2 चारित्रिक गुण :

गोपाल चतुर्वेदी जी का अधिकांश जीवन लेखकीय अस्मिता की पहचान का जीवन है। उनमें अहंकार लेशमात्र भी नहीं है। वे विनम्रता गंभीरता, सहानुभूति सच्चाई जैसे चारित्रिक गुणों का भण्डार है।

उनसे मिलने पर एक अपनेपन का अहसास होता है एक प्रकार की आत्मीयता का बोध होता है। प्रेमजमेजय जी इनकी इन्हीं खूबियों के बारे में बताते हुए कहते हैं- ''गोपाल चतुर्वेदी के साथ मेरी पहली मुलाकात उनकी ओर से बहुत आत्मीय थी पर मैं नहीं हो पाय। अत्मीयता ने बहुत धीरे हमारे संबंधो में पैर पसारे हैं जैसे धीरे से अनेक बार सरकारी दफ्तर में किसी फाइल को एक मेज से दूसरी मेज तक पहुँचने में लग जाते हैं। गोपाल चतुर्वेदी में आत्मीयता की कमी नहीं है और सुपात्र देखकर वे लुटा भी देते हैं।''[4] इनके चरित्र पर वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। इनके माता पिता के दिय हुए संस्कार इनके चरित्र को और भी आभावन बनाते है। इनके घर का वातावरण भी शांत है। भोर में चिड़ियों की चहचहाहट सुनकर और खिले हुए फूलों को देखकर एक स्फूर्ति एवं सकारात्मकता आती है। जो विचलित मन को भी शांत कर देती है। चतुर्वेदी जी के संपर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति उनके घर के इस वातावरण एवं उनकी सरलता, उदारता, शालीनता, सौम्यता तथा व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है। इनके जीवन का दृष्टिकोण साफ-सुथरा और स्वस्थ्य है। कई बार अच्छे लेख या पुस्तक पढ़कर उन्हें उस लेखक से इष्र्या होती है कि यह इतना अच्छा लिख रहा है, पर यह द्वेषात्मक कम और प्रशंसात्मक अधिक है। इनके चरित्र में उनके मन की शक्ति की खोज की जा सकती है। इनके किसी न किसी पात्र को यह बोध अवश्य होता है कि दुःख और सुख तो मानने की वस्तु है। दुःख मानो तो दुःख अन्यथा मृत्यु भी सुखदायी है।

### 2.2.3 चतुर्वेदी जी की स्मरण-शक्ति :

गोपाल चतुर्वेदी की स्मरण शक्ति बहुत तीव्र है। अपने माता-पिता द्वारा दी गई शिक्षाएँ उन्हें सदैव याद रहती हैं। उन्हें अपनी दादी-नानी द्वारा सुनी हुई कहानियाँ इस प्रकार याद है जैसे ये कल की ही बात हो अपने बचपन की महत्वपूर्ण घटनाएँ भी उन्हें अच्छी तरह याद है। उनके सामने घटी कोई भी मार्मिक घटना उनके स्मृति पटल पर अंकित ठोस अनुभवों से और उनके हृदय की भाषा से साहित्य का ताना-बाना बुना हुआ है।

गोपाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व के निर्माण में सर्वप्रथम उनके माता-पिता एवं दादा-दादी के परम्परागत संस्कारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनकी माता ने इन्हें कर्मशीलता की प्रेरणा दी तो पिता से अध्ययनप्रियता प्राप्त हुई। जीवन की दूसरी पारी में पत्नी का भी इन्हें विशेष सहयोग प्राप्त हुआ और शायद यही कारण है कि आज वे एक सफल एवं महान् व्यंग्यकार है।

चतुर्वेदी जी का विलक्षण तथ्य यह है कि किसके यहाँ क्या खाना खाया उन्हें याद रहता है। जिससे भी एक बार मिल लिए उसे भूलने की प्रवृत्ति उनकी नहीं है। संयुक्त परिवार के दायित्वों ने भी उनके व्यक्तित्व को प्रखरता प्रदान की। नये-नये विद्वानों तथा उनकी रचनाओं को और अपने मित्रों को वे सदा याद रखते हैं। वास्तव में चतुर्वेदी जी संबंधों का निर्वाह करने वाले व्यक्ति हैं।

### 2.2.4 जीवन मूल्य :

गोपाल जी का मानना है कि आज हम मूल्यों को मरते हुए देख रहे हैं। वह उन मूल्यों को जीवित होते हुए, पुनर्सृजित होते हुए देखना चाहते हैं। मूल्य चेतना उनके भीतर बसी हुई है जो उन्हें आक्रोश और विद्रोह के लिए उकसाती है, लिखने के लिए प्रेरित करती हैं। उन्हें लगता है कि वर्तमान राजनीति, पुलिस

तंत्र मानवीय मूल्यों के खिलाफ हैं। मूल्यों को ये सारी शक्तियाँ विफल कर रही हैं। प्रेम, करूणा, सहानुभूति, निडरता, मासूमियत, आदि जो मनुष्य को मनुष्य के साथ जोड़ने वाले मूल्य हैं उन्हें ये तोड़ रही हैं। इसके साथ ही साथ लोगों में सांस्कृतिक मूल्यहीनता भी समाज में लगातार बढ़ रही है। चतुर्वेदी जी कहते हैं कि इन मूल्यों को स्थापित करना ही उनका ध्येय है।

### 2.2.5 बौद्धिक ज्ञान एवं तर्कशीलता :

गोपाल चतुर्वेदी की बौद्धिक प्रखरता उनके व्यंग्य-साहित्य में देखने को मिलती है। चतुर्वेदी जी की बुद्धि शुरू से ही प्रखर थी। उनकी प्रथम रचना को ही प्रकाशन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सरकारी नौकरी के साथ-साथ वे लेखन के लिए समय निकालते रहे हैं। रचनात्मक लेखन में रूचि लेते हुए भी वे राजनीतिक हलचलों के प्रति जागरूक रहते हैं और जलसों, संगोष्ठियों व अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में भी सम्मिलित होते हैं। बौद्धिकता के साथ-साथ तर्कशीलता भी इनका प्रमुख गुण रहा है। बचपन में उन्हें जिस बात के लिए मना किया जाता था, उसे वे अपनी तर्क की कसौटी पर कसने का प्रयास करते थे। यही तर्कशीलता चतुर्वेदी जी के सम्पूर्ण व्यंग्य साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने अपनी रचना में किसी भी तथ्य को तब तक स्वीकार नहीं किया जब तक उसको अपने मन और मस्तिष्क की अदालत में सही नहीं पा लिया।

### 2.2.6 कल्पना शक्ति :

गोपाल चतुर्वेदी एक साहित्यकार हैं, और एक साहित्यकार, चित्रकार के अंदर कल्पना शक्ति का होना अपना एक अलग ही स्थान रखता है। यह वह शक्ति है जो किसी रचनाकार की रचना को कालजयी बनाती है। गोपाल जी की कल्पना की अभिव्यक्ति उनके व्यंग्य-साहित्य में देखने को मिलती है। उन्होंने अपनी कल्पना के सभी रूपों को व्यंग्य-साहित्य में उकेर दिया है। प्रत्येक रचना में उन्होंने कल्पना के

आधार पर सूक्ष्म को स्थूल और निर्विकार को साकार रूप में रूपांतरित किया, तभी उनकी हर एक रचना वास्तविक रचना बन सकी है।

इस प्रकार गोपाल चतुर्वेदी इस समय के अग्रणी व्यंग्यकार होते हुए भी एक सहृदय व्यक्ति हैं। इनके व्यंग्य लेखों में छोटे से लेकर  बड़े, गरीब से लेकर अमीर सभी को समरूप देखा जा सकता है। इनका व्यंग्य एक ओर जहाँ सहृदयता से भरा हुआ है वहीं दूसरी ओर तीखा और पैना भी है। गोपाल जी कटु सत्य कहने में भी हिचकिचाते नहीं है और इनके इसी स्वभाव का प्रभाव इनके व्यंग्य-साहित्य पर भी पड़ा है। यही मूल कारण है कि इनका व्यंग्य-साहित्य अति यथार्थवादी हो गया है। ये अपने में मौलिकता का विशेष ध्यान रखते है।

गोपाल जी स्पष्टवादी है और ये अवसरवादिता से कोसों दूर रहते हैं। प्रकृति से इनका अगाध प्रेम है। इन्हें पहाड़ी स्थान अत्यधिक प्रिय है। इनके व्यंग्य साहित्य में प्रकृति चित्रण की भरमार है। पशु पक्षियों से भी इन्हें अत्यधिक प्रेम है तभी तो उन्होंने हाल में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'सत्तापुर के नकटे' में विलुप्त हो रही एक छोटी सी चिड़िया 'गौरैया' को अपने व्यंग्य लेख के माध्यम से बचाने का प्रयास किया है।

गोपाल जी सहृदय व्यक्तित्व के स्वामी हैं जो संबंधों का निर्वाह भली प्रकार करना जानते हैं। संबंध चाहे प्रकृति से हो, पारिवारिक हो राजनीतिक हो या कार्यालयी हो या धार्मिक उसे निभाने में वे कभी पीछे नहीं हटते।

गोपाल जी उदारवादी व्यक्ति है। ये प्रायः गरीबों को दान देते रहते हैं। और कभी-कभी इनकी इस उदारता का अनुचित लाभ लोग उठाते है। कृतियों में इनकी सहानभूति गरीबों, दलितों एवं शोषित व्यक्तियों के साथ अधिक दिखाई देती है। अपने व्यंग्य-साहित्य में भी इन्होंने पूँजीवादियों के भ्रष्टाचार की

खुलकर निंदा की है। सारांशतः गोपाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व सहानुभूति, सहृदयता उदारता से भरा हुआ है इनके हृदय में सभी जाति, धर्म गरीब-अमीर आदि व्यक्तियों के लिए एक समान भाव है।

## 2.3 कृतित्व :

गोपाल जी वर्तमान समय के ऐसे गिने चुने व्यंग्यकारों में से हैं जिन्होंने सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक मिथ्याचार और राजनीतिक भ्रष्टाचार को समाज के समाने लाने का पूरा प्रयास किया है। इन्होंने समाज में व्याप्त विसंगतियों और विद्रूपताओं को बड़ी बेबाकी के साथ अपने व्यंग्य लेखों के माध्यम से आम आदमी तक पहुँचाने का कार्य किया है। इन्होंने हर स्थिति में मनुष्य की स्वार्थपरताओं, मर्मिकताओं, कमजोरियों को अपनी कलम का शिकार बनाया है। हिन्दी साहित्य के विद्वान, गोपाल जी का सरस्वती के मंदिर के आस्थावान पुजारी, निरंतर संघर्ष का विनम्र स्वर, सदाबहार लेखक दो पीढ़ियो के साथ संक्रमण के साहित्यकार तथा निश्छल साधक साहित्यकार आदि आदि वाक्यांशों से मूल्यांकन करते हैं।

"हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल केशवचन्द्र वर्मा और रवीन्द्रनाथ त्यागी की पीढ़ी के बाद जो व्यंग्यकार बहुत तेजी से उभरकर आए हैं उनमें गोपाल चतुर्वेदी का नाम काफी ऊपर आता है पत्र पत्रिकाओं के कॉलमों में जीवन-जगत से जुड़ी आम आदमी से संबद्ध नित्यप्रति की स्थितियों को उन्होंने अपने शालीन और आभिजात्य से परिपूर्ण व्यंग्य का निशाना बनाया है, जिसमें भाषा का संयम और सुरूचि का ध्यान बनाए रखने का प्रयत्न निरंतर दृष्टिगोचर होता है। आला अफसर होने के बावजूद वह सरकार, पूंजीपतियों और तथा कथित बड़े लोगों की नहीं बल्कि आम आदमी की वकालत करते हुए मिलते हैं, और अफसरों, तस्करों, नेताओं, व वगैरह-वगैरह को बख्शने के मूड में कतई नजर नहीं आते।"[5]

गोपाल जी ने जो भी लिखा है, जीवन से निकालकर लिखा है। उन्होंने जीवन को बहुत गहराई से और बहुत करीब से देखा है। उनकी यही विशेषता उनकी लेखकीय ताकत है। उनके व्यंग्य साहित्य के विविध आयामों को देखना-परखना एक प्रीतिकर अनुभव की अनुभूति जगाता है।

गोपाल चतुर्वेदी छात्र जीवन से ही लेखन से जुड़े हुए है। इन्हें हम एक व्यंग्यकार के रूप में ही जानते हैं किंतु लेखन के शुरूआती दिनों में इन्होंने कुछ कविताएँ भी लिखी, जो प्रकाशित भी हुई। बाद में ये व्यंग्य लेख लिखने लगे और पिछले ढाई दशक से ये केवल व्यंग्य लेखन से ही जुड़े हुए हैं। व्यंग्य के मध्यम से ही इन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, बुराईयों, विद्रूपताओं आदि को दूर करने का प्रयास किया है। गोपाल चतुर्वेदी वर्तमान समय के अग्रणी व्यंग्यकार हैं और इनका प्रकाशित साहित्य इनकी प्रतिभा का स्वमेव साक्षी है, जो निम्नलिखित है-

**(क) काव्य संग्रह**

1. कुछ तो हो
2. धूप की तलाश

**(ख) व्यंग्य संग्रह**

1. अफसर की मौत
2. दुम की वापसी
3. खंबो का खेल
4. आजाद भारत में कालू

5. फाइल पढ़ि-पढ़ि

6. गंगा से गटर तक

7. दाँत में फँसी कुरसी

8. राम झरोखे बैठ के

9. फार्म हाउस के लोग

10. नैतिकता की लँगड़ी दौड़

11. भारत और भैंस

12. जुगाड़पुर के जुगाड़ू

13. आदमी और गिद्ध

14. धाँधलेश्वर

15. इक्यावन श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ

16. खरी-खोटी

17. कुरसीपुर का कबीर

18. प्रतिनिधि व्यंग्य संग्रह

19. निर्लज्ज समय के आस-पास

20. सत्तापुर के नकटे

21. संकलित व्यंग्य

**(ग) पत्र पत्रिकाओं में लेखन-**

1. 'सारिका व 'इंडिया टुडे' (हिंदी) में कोई वर्षों तक व्यंग्य कॉलम लिखे।

2. 'नवभारत टाइम्स', 'हिंदुस्तान,' दैनिक भास्कर में अनेक वर्षों तक नियमित रूप से व्यंग्य कॉलम लेखन

3. प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिक 'साहित्य अमृत' में प्रथम अंक से नियमित कॉलम लेखन

**(घ) सम्मान एवं पुरस्कार :**

1. 1985-86 में हिंदी अकादमी दिल्ली द्वारा 'अफसर की मौत' के लिए श्रेष्ठ कृति पुरस्कार।

2. 1986 में कविता 'जय देश भारत भारती' भारत सरकार के राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम 'अपना उत्सव' में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी द्वारा आशय गीत के रूप में चुनी गई। गीत का संगीत पंडित रविशंकर ने तैयार किया तथा सुश्री आशा भोंसले ने इसे स्वर दिया।

3. 1986 में रेलवे बोर्ड द्वारा 'अफसर की मौत को प्रेमचंद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

4. 1988-89 में 'दुम की वापसी' को हिंदी आकादमी, दिल्ली द्वारा श्रेष्ठ कृति पुरस्कार

5. 1991-92 में हिंदी साहित्य में अनुपम योगदान के लिए आखिल भारतीय भाषा सम्मेलन पुरस्कार

6. 1995-96 में हिंदी व्यंग्य विधा में अद्वितीय योगदान के लिए हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा

साहित्यकार सम्मान।

7. 1998 में साहित्य में योगदान के लिए कुलदीप गोसाईं स्मृति पुरस्कार।

8. 1999 में हास्य एवं व्यंग्य में महत्वपूर्ण योगदान के लिए सेठ गिरधारी लाल सराफ ठिठोली पुरस्कार

9. 2000 में हिंदी भाषा संवद्र्वन में योगदान के लिए सहसा्रब्दि विश्व हिंदी भवन द्वारा व्यंग्य श्री लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार।

10. 2001 में हास्य एवं व्यंग्य में अद्वितीय योगदान के लिए हिंदी भवन द्वारा व्यंग्य श्री लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार।

11. 2001 में उत्तरप्रेदश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा साहित्य भूषण सम्मान।

12. 2003 में 'राम झरोखे बैठ के' को हिंदी अकादमी दिल्ली द्वारा साहित्यिक कृति सम्मान।

13. 2006 अट्टहास, शिखर सम्मान, माध्यम जयपुर द्वारा।

14. 2007 उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का 'हिंदी गौरव' सम्मान

15. 2008 अखिल भारतीय 'अंतर्राष्ट्रीय मंचीय कवि पीठ द्वारा शारदा सम्मान।

16. 2009 अखिल भारतीय अंतर्राष्ट्रीय मंचीय कवि पीठ द्वारा शारदा सम्मान।

17. भारतीय बुद्धिजीवी संघ द्वारा प्रदत्त साहित्य की सेवा के लिए यू.पी. रत्न सम्मान।

18. सुब्रमण्य भारती सम्मान, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

19. स्नेहलता गोइन्का व्यंग्यभूषण पुरस्कार, कमला गोइन्का फाउण्डेशन मुम्बई।

20. उत्तर प्रदेश का यश भारती सम्मान (2015-2016)

**(ड.) विविध**

1. छात्र जीवन से ही रेडियो तथा टेलीविजन कार्यक्रमों में कविताओं व व्यंग्य पाठ में निरंतर भागीदारी तथा साहित्यिक सम्मेलनों में भाग लेना।

2. प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित केंद्रीय हिंदी समिति के भारत सरकार द्वारा नामित सदस्य।

### 2.3.6 भाषा शैली :

गोपाल चतुर्वेदी की भाषा में वह मारक एवं भेदक क्षमता है जो चोट ही नहीं पहुँचाती अपितु अंदर से तिलमिलाहट भी पैदा करती है। कन्हैयालाल नन्दन के अनुसार- ''गोपाल की भाषा सरपट दौड़ते हुए हंटर मारती है और पलटकर नहीं देखती कि चोट कितनी लगी किसी भी शानदार और आनदार लेखक के लिए सबसे बड़ा दर्द होता है मूल्यों और आदर्शों के आहत होने का दर्द। इसी को बयान करने में ही तो किसी लेखक की निजता झाँकती है।''[6]

गोपाल चतुर्वेदी अपनी बात को कहानी के माध्यम से कहते हैं। वे मात्र टिप्पणियाँ ही नहीं करते वरन् पात्र तथा घटनाओं के माध्यम से विसंगतियों की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट करते है प्रेम जनमेजय के अनुसार- ''गोपाल चतुर्वेदी अपनी चिर परिचित शैली में पहले तो भूमिका स्वरूप वर्तमान में व्याप्त विसंगतियों का चित्रण करते हैं उन पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए अपने विषय को स्थापित करते है। इनकी रचनाएँ अकसर किसी घटना से आंरभ न होकर लेखनीय वक्तत्व से आरंभ होती हैं, परन्तु एक दो अनुच्छेद के बाद घटनाओं तथा पत्रों का सृजन करने लगती है।''[7]

अपनी भाषा के मारक प्रयोगों से विसंगति का स्मारक बनाने वाले गोपाल चतुर्वेदी की शैली के विषय में कन्हैयालाल नंदन कहते हैं-''गोपाल की शैली में यह बहुत बड़ा दोष है कि वे अपने पहले वाक्य से आखिरी वाक्य तक पाठक को ऐसा उलझाकर रखते हैं कि व्यंग्य के आनंद में वह सिर्फ गोपाल के साथ होकर रह जाता हैं।"[8]

गोपाल चतुर्वेदी की साहित्य के प्रति बचपन से ही विशेष रुचि रही है। इनका साहित्य संवेदनशीलता व मानवीय परिस्थितियों का बड़ा ही भावुक स्पर्श है आरम्भ में गोपाल जी के दो काव्य संग्रह कुछ तो हो तथा 'धूप की तलाश' प्रकाशित हुए। कविता करने में इनके मन को संतुष्टि न मिली क्योंकि कविता में कल्पना सरसता और सहृदयता को बचाए रखना अत्यंत आवश्यक है किंतु समाज की रूढ़ियों सच्चाइयों केा व्यंग्य के माध्यम से ही दर्शाया जा सकता है जैसा कि इन्होंने स्वयं कहा है- ''मैंने कविता को नहीं छोड़ा और न ही कविता से झगड़ा हुआ। कुछ ऐसी परिस्थितियाँ हैं, कुछ जीवन की ऐसी सच्चाईयाँ देखने में आईं कि लगा कविता इस सबको बयान करने का इतना अच्छा माध्यम नहीं है।''[9] अतः इन्होंने विशुद्ध रूप से व्यंग्य लेखन आरंम्भ कर दिया। इनकी लेखनी में दर्द है, जो उनके व्यंग्यो में देखा जा सकता है। चतुर्वेदी जी की रचनाओं में जीवन और जगत की चेतना मुखरित हुई है इनकी रचनाओं में, अव्यवस्था और आम आदमी की पीड़ा एक साथ व्यक्त हुई है।

'फाइल पढ़ि-पढ़ि' गोपाल चतुर्वेदी का 28 व्यंग्य लेखों का संग्रह है। इसमें लेखक ने सरकारी तंत्र से संबंधित दफ्तर की राजनीति, उसमें फैले हुए भ्रष्टाचार, उसकी व्यवस्था-अव्यवस्था पर पैनी दृष्टि दौड़ाई है और उसके एक-एक कोने को पाठक के सामने खोल कर रख दिया है। इसमें सचिवालय और हिमालय, वेतन आयोग और उल्लू, बरसात में बाबू, सरकार रफ्तार और साइकिल, कूड़े का समाजवाद, सावधान ऑडिट चालू है, पेंशन पंचायत और प्रमोशन आदि व्यंग्य लेख सम्मिलित हैं। इनके ये व्यंग्य लेख इतने यथार्थ और सजीव हैं कि इन्हें पढ़ते समय ऐसा लगता है कि वाकई हम किसी दफ्तर में खड़े हैं और

उसकी अव्यवस्था का शिकार है। इन व्यंग्य लेखों को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि यह आप बीती ही है।

"हम दफ्तर की तैयारी करने लगे। आप क्या तैरकर जाएंगे? पत्नी ने टिप्पणी की पत्नी को कैसे बताते कि जाना जरूरी है। सीट पर भविष्यनिधि से निकासी की आर्जियां निपटानी है। यदि कहीं जल्दी मची और बड़े बाबू ने दूसरे को दे दी तो महीने भर का चाय-समोसे का ख़र्चा डूब जाएगा''[10]। इसी प्रकार ऑफिस में होने वाली छोटी-छोटी बातों का उल्लेख इन्होंने अपने इस व्यंग्य संग्रह में किया है।

'फार्म हाउस के लोग' 21 व्यंग्य लेखों का संग्रह है। इसमें एक दिन दिवाले का, दास्ताँ दाखिले की, जन्मदिन के क्लेश रिश्तों के रेगिस्तान आदि लेख हैं। इस व्यंग्य संग्रह के लेखों में गिरती हुई मानवता की ओर संकेत किया गया। शादी-ब्याह में खाने के लिए मची लूट, पान खाकर कहीं भी थूक देना आदि आम आदमी की गतिविधि के बारे में बताया है। स्कूलों में होने वाले दाखिले के डोनेशन के खेल को बताते हुए गोपाल जी कहते हैं-''साहब को हेड-क्लर्क के पास ले जाओ। उनसे कहो कि विज्ञापन वाली रेट लिस्ट इनको दे दो। मेरी छपी हुई अपील भी। जब वह आठ ऐड ले आएँ तो इनके लड़के के लिए एडमीशन टेस्ट का कॉल लेटर इश्यू करें। प्रिंसिपल साहब ने ओदश दिया।

"अच्छा एडमीशन टेस्ट पंद्रह दिन बाद है। उसके बाद चाहें तो आप कॉल लेटर पर्सनली ले जाए। प्रिंसिपल साहब ने इंटव्यू समाप्त किया हम लोग बाहर आए। प्यास से गला सूख रहा था पेट में चूहे उछल कूद कर रहे थे।

पत्नी बोली, ''बड़ी भूख लगी है।'' मैंने अनायास पूछा, ''क्या इस प्रिन्सिपल को भूख नहीं लगती?''[6]

''इसे खाना खाने की जरूरत नहीं हैं। यह तो डोनेशन खाता है या विज्ञापन।' उन्होंने बड़ी सहजता से उत्तर दिया।''[11]

यह सामाजिक अव्यवस्था ही है कि आज कोई भी कार्य बिना डोनेशन और बिना सोर्स के नहीं होता है। इस दौड़ में बेचारे वे ईमानदार व्यक्ति पीछे रह जाते है जो प्रत्येक कार्य ईमानदारी से करते है और वैसे ही करवाना चाहते है। आजकल इस समाज में ईमानदारी एक अपराध हो गई है। अगर बोल बाला है तो केवल झूठ और बेइमानों का।

आदमी और गिद्ध गोपाल चतुर्वेदी का 26 व्यंग्य निबन्धों का संग्रह है। इसमें साहित्य का ब्राहमणवाद, गांधारी की पट्टी, आदमी और गिद्ध, पर्यटन के छोटे-बड़े ठग, देश के आधुनिक निर्माता आदि व्यंग्य लेख हैं। लेखक ने इस संग्रह में मानव में समाप्त हो रही संवेदनाओं का जिक्र किया। आज के युग में माता पिता अपने बच्चों का लालन पोषण लाड प्यार से करते हैं किंतु बड़े होने पर वे ही बच्चे अपने बुजुर्ग माता-पिता की सेवा नहीं कर पाते हैं और उन्हें या तो आश्रम भेज देते हैं या फिर वे वृद्ध घर के एक कोने में पड़े रहते है जहाँ उनका दुख-दर्द सुनने वाला कोई नहीं होता है। उनके अपने बच्चे ही इस बात का इंजार करते है कि कितनी जल्दी इनके प्राण निकले और बुजुर्ग  नामक इस बला से उनका पीछा छूटे- ‘‘छोटे साहब पूजा-पाठ के बावजूद पिता के प्राण न जाने से परेशान थे गार्ड की बदतमीजी से उनका पारा और चढ़ा। वह पैर पटकते आए और गुर्राए, ‘‘क्या हो गया?’’[8]

‘‘हुआ तो कुछ नहीं, सरकार! बस सामने के पेड़ पर गिद्ध आकर बैठे हैं। वह अच्छा शकुंन नहीं है। हमने सोचा कि उन्हें गोली से उड़ाने के पहले आपकी इजाजत ले ले।

इक्कीसवीं सदी में अच्छे-बुरे शकुन की बात करते तुम्हें शरम नहीं आती है।....

इतने में उसे भाई-भाई का वार्तालाप सुनाई दिया। छोटा भाई बड़े से कह रहा था, ‘‘क्या हो गया, भैया! आप गार्ड पर बिगड़ रहे थे?’’[9]

''कुछ नहीं यार, सामने पेड़ पर गिद्ध आ बैठे हैं। वह कम अक्ल हमें बता रहा था कि यह बुरा शकुन है, हमारे लिए तो अच्छा है पर फले तो! डाक्टर-पंडित सब फेल हो गए है, बूढ़ा है कि टिका हुआ है।''[12]

इस प्रकार आज की दुनिया में व्यक्ति केवल अपना ही भला चाहता है। वह अपने आगे अपनों तक को भूल गया है। इसी प्रकार की विडम्बनाओं को उन्होंने इस लेख संग्रह दिखाया है।

धाँधलेश्वर गोपाल चतुर्वेदी के चुने हुए 101 व्यंग्य लेखों का संग्रह है। जिसमें नौकरशाही, लालफीताशाही, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, धार्मिक भ्रष्टाचार आदि से संबंधित लेख मिलते हैं। इसमें नेता और नाक, कविता में अंतर्राष्ट्रीयता तरह-तरह के ओलम्पिक, बजट और बसंत आदि विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित लेख देखने को मिलते हैं। इस तरह संग्रह में इनके अधिकतर लेख राजनैतिक एवं प्रशासनिक भ्रष्टाचार को दिखाते हैं। प्रशासनिक सेवा में रहते हुए इन्होंने प्रशासन और राजनीति में हो रहे भ्रष्टाचार को भली-भांति देखा है। जहाँ एक ओर नेताओं के कथनी-करनी के अंतर को देखा वहीं प्रशासनिक अधिकारियों को उनकी चमचागिरी करते हुए भी देखा है। इन्होंने उच्च पदों पर रहने के बावजूद बाबुओं के दर्द को भी बखूबी समझा है। इसी कारण गोपाल चतुर्वेदी प्रमाणिक व्यंग्य के लेखक के रूप में सामने आए हैं।

इस आधुनिक भारत में हर जगह  जुगाड़ की जुगत है आजकल शिक्षा जगत में भी भाई-भतीजावाद तेजी से पनप रहा है इसी पर व्यंग्य करते हुए गोपाल जी कहते है- ''शिक्षा के दायरे में पठन-पाठन से लेकर प्राध्यापन तक चरण छू-गुरू-शिष्य परम्परा है। वरीयता क्रम में पहले रिश्तेदार, फिर जानकार आते हैं। जाहिर है कि आलोचना में भी यही हो। प्राध्यापक जिस लगन से साल में आठ-दस हजार कापियाँ जाँचते हैं, उसी हुनर से साहित्य को आंकते हैं। एक ज्ञानी दूसरे को सूचित करता है, ''यार, मेरा भतीजा इस साल इम्तिहान में बैठा है। ज़रा ध्यान रखना।''[11]

''क्यों नहीं, आखिर आपने भी तो मेरे भाई का कल्याण किया था।'' दूसरा आश्वस्त करता है।''[13]

इसी प्रकार गोपाल जी के अन्य संग्रह अफसर की मौत, दुम की वापसी खम्भों के खेल, भारत और भैंस सभी में ही राजनैतिक प्रशासनिक भ्रष्टाचार का उद्घाटन बड़ी ही तीक्ष्णता के साथ किया है। इन्होंने साहित्य, स्कूल में दाखिले, सामाजिक विसंगतियों पर भी व्यंग्य किया है। ये छोटे से वाकये को भी अपने व्यंग्य का विषय बनाने में पूर्णतया सक्षम है। हाल ही में प्रकाशित व्यंग्य संग्रह, 'निर्लज्ज समय के आस-पास' में वे विदेशों से आए पर्यटकों को कैसे 'अतिथि देवोः भव' के नाम पर ठगा जाता है इसका उद्घाटन किया है- ''कहने को सब कहते हैं कि ज्यादातर धर्म का ढोंग हैं। दिखावा है। धोखा है। ज्यादातर दुकानदार होटल, गाइड, टैक्सी वाले, यह मानकर चलते हैं कि टूरिस्ट अगर हिंदूस्तान आता है तो ठगे जाने के अरमान लेकर ही पधारता है। यदि उसके मन में ऐसी हसरत न होती तो वह आता ही क्यों; उसकी इच्छा पूरी करो। उसे ठगो वर्ना वह निराश होगा।''[14] इस प्रकार गोपाल जी वर्तमान समय में विदेशी पर्यटकों के साथ हो रहे अभद्र व्यवहारों और ठगी को भी अपने व्यंग्य का विषय बनाकर समाज के लोगों को अतिथि का सम्मान करने का पाठ पढ़ाते नज़र आते हैं।

गोपाल जी लुप्त होती गौरैया को भी अपनी लेखनी का विषय बनाते है। उन्हें ऐसा लगता है कि मानवीय भावनाओं के कम होने के कारण ही गौरैया विलुप्त हो रही हैं। और इसी मानवीय संवेदनहीनता के कारण शायद गरीब आदमी भी लुप्त होने की कागार पर है- ''हमें खुशी है। कि गौरैया के अस्तित्व का संकट मिटाने को संसार प्रयास कर रहा है। इस मजबूर आदमी को बचाने की शपथ हम कब लेंगे? नहीं तो गौरैया कैसे बचेगी, अपने अभाव पीड़ा के बावजूद इसके दिल में दूसरों का दर्द हैं। सिर्फ अपने हित-साधना की प्रतियोगिता में लगे सफल लोग कभी दूसरों का सोचते भी हैं क्या?''[15]

इस प्रकार गोपाल चतुर्वेदी अपने साहित्य में समाज और राजनीति से संबंधित समस्त छोटे से छोटे तथा बड़े से बड़े भ्रष्टाचार को उजागर करने में सक्षम नजर आते है। उनके साहित्य में सामाजिक

भ्रष्टाचार पर तीव्र प्रहार किया गया। इनके व्यंग्य समाज को एक नई दिशा एवं गति प्रदान करने का कार्य करते हैं।

''गोपाल चतुर्वेदी के छोटे-छोटे हास्य व्यंग्य निबंधों का संकलन 'दुम की वापसी' में उनके कुल बत्तीस व्यंग्य निंबंध शामिल किए गए हैं। इन बत्तीस निबंधों को पढ़ते-पढ़ते पाठकों की बत्तीसी भी दिखाई दे सकती है। मगर अधिकांशतः मुस्कान और वह भी लगभग इंच भर मुस्कान की गुंजाइश की अधिक निकलती है मगर कहना होगा कि लेखक ने समाज, परिवार, राजनीति नौकरशाही के कई पक्षों को लेकर उनकी विसंगतियों पर अपनी सटीक और अर्थपूर्ण हास्य व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ की है।''[16]

दुम की वापसी के बाद 'खंभों के खेल' उनका अगला व्यंग्य संकलन है जिसमें उनके लगभग 40 व्यंग्य समाहित हैं। ''समाज राजनीति, पत्रकारिता और पुलिसिया क्षेत्रों में व्यक्ति अगर जनमंत्र के स्तंभ है जो व्यंग्यात्मक भाषा में उन्हें खंभा ही कहा जाएगा। समाज के विभिन्न पक्षों और रूप को विसंगत बनाने वाले इन खंभों की मानसिकता और कारगुजारियों से छेड़छाड़ करते हुए इनका पर्दाफाश करते हुए, इन पर व्यंग्य प्रहार करते हुए सभी दुर्बलताओं, कथनी, करनी के अंतरों की कलई खोलते हुए आक्रमण विनोद और व्यंग्य की मुद्रा अपनाते हुए गोपाल चतुर्वेदी ने खंभों के खेल के साथ भी अच्छा खिलवाड़ किया है जिसमें व्यंग्य द्वारा सर्जित एवं अर्जित लक्ष्यों तक पहुँचने की कामयाब कोशिश है।''[17] इस व्यंग्य संग्रह में रोजमर्रा के जीवन में उभरने एवं घटित होने वाली स्थितियों को मध्यमवर्गीय संदर्भो में उभारा गया है। मध्यमवर्ग ही भारतीय समाज में ऐसा वर्ग है जो विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों, विसंगतियों और विरूपताओं से सर्वाधिक प्रभावित होता है। उसे अपनी सफेदपोशी को बनाये रखने के लिए नित नये-नये खट्टे मीठे अनुभवों से गुजरना पड़ता है। गोपाल चतुर्वेदी ने इन्हीं अनुभवों को व्यंग्य विनोद का रचनात्मक जामा पहनाया है।

'कुरसीपुर का कबीर' व्यंग्य संग्रह में कुरसी पर बंदर, मंदिर और मनोरंजन भौतिक-सांस्कृतिक प्रगति और परिवार दफ्तर के अफेयर आदि, कुल इक्कीस व्यंग्य संग्रहीत हैं। इसमें लेखक ने स्वार्थ लिप्सा से भरपूर और उपलब्धि के मोह में डूबे हुए एक ऐसे व्यक्तित्व का खाका खींचा है जिसका नाम तो कबीर है किंतु, हैं वह नाम के विपरित। इस प्रकार नाम बड़े और दर्शन छोटे वाली बात का अद्भुत एवं बेहतरीन उदाहरण इस व्यंग्य संग्रह में देखने को मिलता है कुरसीपुर के कबीर का जन्म एक पंचायत प्रधान के परिवार में हुआ उसने अपने पूज्य पिता को बचपन से नाली-खडंजे और नरेगा का सदुप्रयोग करते, याने पैसे खाते देखा। वह जब से स्कूल गया, पिता के लिए कमाई का साधन बन गया। नरेगा के रजिस्टर पर कहीं पैर का अंगूठा लगाता, कहीं हाथ का। प्रधान जी ने जब अपने घर के पास नाली बनवाई तो उसमें उसने कबीर कुमार के नाम से हस्ताक्षर कर दिहाड़ी कमाई। तब तक वह अक्षर ज्ञानी हो चुका था। उसके प्राध्यापक उसकी प्रतिभा से चकित थे।''[18]

इस प्रकार इस व्यंग्य संकलन में व्यंग्यकार ने रचना के शीर्षक में हो उभरनेवाली अनेकानेक विसंगतियों के रूप को बखूबी उभारने का काम किया है।

'इक्यावन श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ' में गोपाल चतुर्वेदी ने अपने इक्यावन श्रेष्ठ व्यंग्यों को सम्मिलित किया है। सीटी बजाने की लुप्त होती कला, अपने बड़े न बनने का दर्द, दादा का अहिंसा उसूल कूड़े के समाजवाद, पुलिस की जनसेवा लाल आँख के फायदे आदि व्यंग्य लेख इसमें संकलित हैं। इस व्यंग्य संग्रह में संकलित सभी रचनाएँ राजनीति, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि से संबंधित सभी विसंगतियों विद्रूपताओं को दर्शाती है। इस पुस्तक में प्रस्तुत सभी रचनाएँ स्वयं में पूर्णता का अहसास कराती है और प्रायः एक दूसरे से अप्रभावित भी है। इनमें एकरसता नहीं अपितु विविधता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि गोपाल चतुर्वेदी के व्यंग्य साहित्य में परिवेश एक जीवित-चरित्र की तरह अपनी साँस व गंध के साथ मौजूद रहता है। और एक चरित्र की भांति ही उनको वांहित स्वर व दिशा देने में अहम् भूमिका अदा करता है एवं व्यंग्य साहित्य को एक अलग पहचान देता है। चतुर्वेदी जी ने अपने साहित्य में मानव जीवन और जनता की चेतना को मुखारित कर दिया है। आम आदमी की पीड़ा को अपने व्यंग्यों माध्यम से व्यक्त कर दिया है। इन्होंने निम्न, मध्यवर्गीय समाज की छोटी-मोटी बहुत सी घटनाओं को अपने व्यंग्य-साहित्य में उभारने का प्रत्यत्न किया। सामाजिक और यथार्थ की माँग दरअसल लेखक अनुभव के विकास की माँग है, जिसमें वस्तु और कला दोनों ही इसमें समाहित होती है। गोपाल चतुर्वेदी ने अपने व्यंग्य साहित्य में ग्रामीण जीवन से लेकर शहर को ऐशो आराम की जिन्दगी जीने वालों का स्पष्ट चित्रण किया है। आज के आधुनिक युग में एक वर्ग दूसरे वर्ग का खूब शोषण करता है और अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अनेक हथकंडे अपनाता है। राजनीतिक और प्रशासनिक कार्यों के विषय में इनके साहित्य का अध्ययन करने से पता चलता है कि आज के राजनेता और अधिकारी कितने भ्रष्ट हो चुके है। आम जनता को बहला फुसलाकर नेता अपने वश में कर लेता हैं और सत्ता में आने के बाद वह जनता का खूब शोषण करता है। गोपाल जी के व्यग्यों में सत्ता संघर्ष की विसंगातियो को उद्धुत रूप से उठाया गया है। इनकी लेखनी से समाज, राजनीति, कार्यलय, स्कूल, घर, अर्थनिति कोई भी अधूता नहीं रहा है। चतुर्वेदी के व्यंग्य में राजनीतिक व्यंग्य तो है ही किंतु प्रशासनिक और दफ्तर संस्कृति पर जितने जोरदार और व्यापक ढंग से व्यंग्य इन्होंने लिखे हैं कदाचित् किसी अन्य हिंदी व्यग्यकारों में नही ‘‘गोपाल चतुर्वेदी के व्यग्यों के बारे में कहा जा सकता है कि वे जनसामान्य का मनोरंजन करने के साथ-साथ सामाजिक सरोकरों को कुरेदते है और सज्जनों को आश्वस्त करते हैं।’’[19] इसी कारण ये वर्तमान युग के हिंदी के श्रेष्ठ व्यंग्यकारों में एक है।

**संदर्भ सूची :**


1. शेरजंगगर्ग, व्यंग्य के सार्थक चितेरे: गोपाल चतुर्वेदी, भाषा पत्रिका, सं. डॉ. शशि भारद्वाज, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय खण्ड - 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली, 110066, सितंबर - अक्टूबर - 2011, अंक 241 पृ. सं. 72

2. गोपाल चतुर्वेदी परिचय, व्यंग्ययात्रा पत्रिका, सं. प्रेम जनमेजय, 73 सक्षर अपार्टमेंट्स ए-3 पश्चिम विहार नई दिल्ली-110063, जुलाई-दिसंबर-2007 अंक 12-13 पृ. सं. 43

3. कन्हैयालाल नंदन, गोपाल की शान में एक गुस्ताखी, वही पृ. सं.47

4 . प्रेमजनमेजय, गोपाल चतुर्वेदी के प्रहार, वही पृष्ठ सं. 44

5. शेरंजग गर्ग, रंगबिरंगी फुलझड़िया व्यंग्य यात्रा, वही पृष्ठ सं. 53

6. कन्हैयालाल नंदन, गोपल की शान में एक गुस्ताखी पृष्ठ 49

7. प्रेम जनमेजय, गोपाल चतुर्वेदी के प्रहार वही पृष्ठ 44

8. कन्हैयालाल नंदन का लेख गोपाल की शान एक गुस्ताखी, व्यंग्य यात्रा पत्रिका संपादक प्रेमजनमेजय 73 साक्षर अपार्टमेन्ट पश्चिम विहार नई दिल्ली 110063 जुलाई-दिसंबर 2007 अंक 12-13 पृष्ठ 51

9. बातचीत, व्यंग्ययात्रा पात्रिका सं. प्रेमजमेजय, 73 साक्षर अपार्टमेंट्स, ए 3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली 110063; जुलाई दिसंबर 2007 अंक 12-13, पृष्ठ सं. 38

10. गोपाल चतुर्वेदी-फाइल पढ़ि-पढि, भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, 110003, सं-2008, पृष्ठ 56

11. गोपाल चतुर्वेदी फार्म हाउस के लोग, ग्रंथ अकादमी, 1659, पुराना दरियागंज, नई दिल्ली, 110002, सं-2011, पृष्ठ 48-49

12. गोपाल चतुर्वेदी आदमी और गिद्ध, ज्ञानगंगा, 205, सी-चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-110006, सं-2010, पृष्ठ 66,67

13. गोपाल चतुर्वेदी, धाँधलेश्वर, भारतीय ज्ञानपीठ, 18 इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, 110003, सं-2008, पृष्ठ 418

14. गोपाल चतुर्वेदी निर्लज्ज समय के आस पास,मेघा बुक्स एक्स-11, नवीन शाहदरा नई दिल्ली, सं.2012, पृष्ठ 218

15 . गोपाल चतुर्वेदी, सत्तापुर के नकटे, सत्साहित्य प्रकाशन, 204 बी.चावड़ी बाजार नई दिल्ली, सं.2014, पृष्ठ 45

16. शेरजंग गर्ग, रंगबिरंगी फुल झड़ियाँ, व्यंग्य यात्रा पत्रिका सं. प्रेमजनमेजय, 73, सक्षर अपार्टमैंट्स, ए-3 पश्चिम विहार नई दिल्ली-110063 जुलाई-दिसंबर-2007 अंक 72-73, पृष्ठ सं. 53

17. डॉ. शेरजंग गर्ग व्यंग्य के सार्थक चितेरे गोपाल चतुर्वेदी, भाषा पत्रिका, सं. डॉ. शशी भारद्वाज केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, पश्चिमी खंड-7 रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली 110066, सितंबर अक्टूबर 2011 अंक 241, पृष्ठ सं 74

18. गोपाल चतुर्वेदी कुरसीपुर का कबीर, ज्ञान गंगा, 205 सी चावड़ी, सं-2010 पृष्ठ 179

19. शेरजंग गर्ग रगंबिरंगी फूलझडियाँ, व्यंग्य यात्रा पत्रिका सं. प्रेमजनमेजय, 73, सक्षर अपार्टमैंट्स, ए-3 पश्चिम विहार नई दिल्ली-110063 जुलाई-दिसंबर-2007 अंक 72-73, पृष्ठ-53